

(१) यशोदा अपने पुत्र को चुप करने के लिए बार-बार समझाती है। वह कहती है – “चंदा आओ ! तुम्हें मेरा लाल बुला रहा है। यह मधु मेवा, पकवान, मिठाई स्वयं खाएगा और तुम्हें भी खिलाएगा। (मेरा लाल) तुम्हें हाथ में रखकर खेलेगा; तुम्हें जरा भी भूमि पर नहीं बिठाएगा।” यशोदा हाथ में पानी का बर्तन उठाकर कहती है – “चंद्रमा ! तुम शरीर धारण कर आ जाओ।” फिर उन्होंने जल का पात्र भूमि पर रख दिया और उसे दिखाने लगी – “बेटा देखो ! मैं वह चंद्रमा पकड़ लाई हूँ।” अब सूरदास के प्रभु श्रीकृष्ण हँस पड़े और मुस्कुराते हुए उस पात्र में बार-बार दोनों हाथ डालने लगे।

(२) हे श्याम ! उठो, कलेवा (नाश्ता) कर लो। मैं मनमोहन के मुख को देख-देखकर जीती हूँ। हे लाल ! मैं तुम्हारे लिए छुहारा, दाख, खोपरा, खीरा, केला, आम, ईख का रस, शीरा, मधुर श्रीफल और चिरौंजी लाई हूँ। अमरूद, चिउरा, लाल खुबानी, घेवर-फेनी और सादी पूड़ी खोवा के साथ खाओ। मैं बलिहारी जाऊँ। गुझिया, लड्डू बनाकर और दही लाई हूँ। तुम्हें पूड़ी और अचार बहुत प्रिय हैं। इसके बाद पान बनाकर खिलाऊँगी। सूरदास कहते हैं कि मुझे पानखिलाई मिले।



- * शीर्षक
 - * रचनाकार
 - * केंद्रीय कल्पना
 - * रस/अलंकार
 - * प्रतीक विधान
 - * कल्पना
 - * पसंद की पंक्तियाँ तथा प्रभाव
 - * कविता पसंद आने के कारण
- इसके अतिरिक्त अन्य मुद्दे भी स्वीकार्य हैं।